Government Degree College, Madhuban,
Pakridayal, East-Champaran
(B.R.A.B.U. Muzaffarpur)

B.A., Part-II, Hon./Sub.
Subject : Geography

Topic : • कैमूर का पठार
• खड़गपुर की पहाड़ी

By,
Dr. Md. Jamshed Alam
Assistant Professor

Email ID : Jamshedmit@gmail.com
Whatsapp No. : 9097179092

बिहार के इस संकीर्ण पठारी क्षेत्र में दो पठार मुख्य हैं।
यथा —
(क) कैमूर का पठार और
(ख) खड़गपुर की पहाड़ी

कैमूर का पठार विन्ध्याचल पर्वत का एक अंग है, जबकि खड़गपुर

की पहाड़ी छोटानागपुर के पठार का एक भाग है।

(क) कैमूर का पठार :— बिहार के पठार के बिलकुल पश्चिम में कैमूर का पठार स्थित है। यह 1280 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में विस्तृत है। इसे रोहतास का पठार भी कहते हैं। यह सोन नदी से लेकर राज्य की पश्चिमी सीमा तक रोहतास और कैमूर जिले में फैला हुआ है। सोन नदी इसकी दक्षिणी और पूर्वी सीमा बनाती है। उत्तर से चूना-पत्थर के स्कार्प इसकी सीमा बनाती है। कैमूर का पठार विन्ध्याचल पर्वत का पूर्वी विस्तार है, जो बालु-पत्थर, चूना-पत्थर और शेल से निर्मित है। यह पठार पथरीला और ऊबड़-खाबड़ है। इसके बीच-बीच में बेसिननुमा घाटियाँ पायी जाती है। पठार के बाहरी भाग की ऊँचाई 150 से 300 के बीच है किन्तु पठार के केन्द्रीय भाग की ऊँचाई 300 से 450 मीटर के बीच है। इस पठार पर स्थित रोहतासगढ़

454 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। इसकी सामान्य ढाल दक्षिण से उत्तर और पश्चिम से पूर्व की ओर है। इसका दक्षिणी भाग 300 से अधिक और उत्तरी भाग 150 से 300 मीटर तक ऊँचा है। इसके किनारे वाले भाग में स्कार्पमेंट अधिक है। अन्य चट्टानों से निर्मित पहाड़ियों की तुलना में शैल चट्टान से निर्मित पहाड़ियाँ कम ऊँची हैं। इसका पूर्वी और उत्तरी स्कार्प अपरदित होकर भ्रंश - रेखा कगार (Fault line Scarp) बन गया है। इसमें जल-प्रपात, गॉर्ज और चूना - पत्थर से संबंधित कंदराएँ पायी जाती हैं। इस पठार में चूना - पत्थर, पायराइट काँच - निर्माण के लिए उपयुक्त बालू और बालू - पत्थर पाये जाते हैं।

(२4) खड़गपुर की पहाड़ी :— यह पहाड़ी लगभग 1300 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में विस्तृत है। यह मुख्यतः मुंगेर जिला में स्थित है, किन्तु इसका विस्तार पूर्व में बांका और दक्षिण में जमुई तक है। यह छोटानागपुर के पठार का एक अंग

है और कोडरमा के पठार के उत्तर-पूर्व में स्थित है। कोडरमा से खड़गपुर की पहाड़ी तक धारवाड़काल की निर्मित क्वार्टजाइट तथा शिष्ट के उभरे हुए क्षेत्र विद्यमान हैं, जिसमें अबरख वाली पेगमाटाइट की पट्टी मौजूद है। नवादा और जमुई में अबरख पाया जाता है। क्वार्टजाइट अधिक कठोर होने के कारण यह कटाव-छाँट से कम प्रभावित हुआ है और ऊँची चोटी का निर्माण करता है। खड़गपुर की पहाड़ी में ग्रेनाइट, शेल, स्लेट और क्वार्टजाइट पत्थर पायी जाती हैं। ग्रेनाइटनिर्मित पहाड़ियाँ कम ऊँची और क्वार्टजाइट निर्मित पहाड़ियाँ अधिक ऊँची हैं। इस पहाड़ी की सीमा 150 मीटर की समोच्च रेखा से बनती है, किन्तु इसकी ऊँचाई 450 मीटर तक पहुँच जाती है। यह पहाड़ी 48 कि.मी. लम्बी और औसत रूप से 38 कि.मी. चौड़ी है। इसका भीतरी भाग स्कार्प, घाटी, गर्म झरना इत्यादि से भरा है। यह अनेकों छोटी-छोटी पहाड़ियों और घाटियों में विभक्त है। श्रृंगचक्षि, बिसान, सकमा, सॉस्तीन, भैरा, खपरा,

सुन्दर इत्यादि मुख्य पहाड़ियाँ हैं जिनके बीच घाटियाँ पायी जाती हैं। बिल्कुल उत्तर में जमालपुर तक इसका विस्तार है। जमालपुर की पहाड़ी क्वार्टजाइट एस्कार्पनिर्मित है।

कैमूर के पठार और खड़गपुर की पहाड़ी के बीच में औरंगाबाद, गया और नवादा के पठार भी दक्षिण बिहार के मैदान से एस्कार्प द्वारा मिले हुए हैं और पहाड़ियों और घाटियों में विभक्त हैं।

Next Class

संरचना
(Structure)

Md. Jamshed Alam